UP Board Notes Class 7 Sanskrit chapter 14 वीराङ्गना विश्पला

शब्दार्थाः- वीराङ्गना = वीर स्त्री, कुर्वती = करती हुई, परिवेष्टिता जाता = घेर ली गई, छिन्नौ = कट गए, हतोत्साहा = उत्साह रहित, आहूतवान् = बुलाया, अकल्पयताम् = जोड़ दिया, बना दिया, निहितम् = जमा किया हुआ, इत्थम् = इस प्रकार, आहृतवती = ले ली, अत एवोक्तम् = इसलिए कहा गया है, सत्तवे = पराक्रम में, उपकरणे = साधन में।

वैदिकयुगेः- ..... इति।

हिन्दी अनुवाद – वैदिक युग में खेल नामक कोई राजा था। वह खेल में अत्यन्त कुशल और विशेषज्ञ था; इसलिए उसका नाम खेल था।
उसकी पत्नी युद्ध में निपुण और वीर नारी थी। उसका नाम 'विश्पला' था।

एक युद्ध में वह युद्ध करती हुई शत्रु द्वारा घेर ली गई, उसके दोनों पैर भी कट गए, वह विकलांग हो गई परन्तु वीर नारी विश्पला निरुत्साहित नहीं हुई। उसके साहस, वीरता और उत्साह को देखकर खेलराज के मार्गनिर्देशक अगस्त्य ने उसी रात में देवचिकित्सक अश्विनी कुमार को बुलाया। उसने विश्पला के दोनों पैर लोहे के लगा दिए और उस वीर नारी ने इसके बाद बहुत उत्साह से शत्रुओं का धन जीत लिया।

इस प्रकार, पहले से विकलांग होते हुए भी वीर नारी विश्पला ने लोहे के पैरों की सहायता से शत्रुओं को जीतकर उनका धन प्राप्त किया। अतः कहा गया है- बहुत साधन न होने पर भी पराक्रम से कार्य सिद्ध होता है।

https://www.evidyarthi.in/